अध्याय-3

शब्द-विचार (क)

प्रत्येक भाषा की अपनी ध्वनि-व्यवस्था, शब्द-रचना एवं वाक्य का निश्चित संरचनात्मक ढाँचा तथा एक सुनिश्चित अर्थ प्रणाली होती है। भाषा की सबसे छोटी और सार्थक इकाई 'शब्द' है। ध्वनि-समूहों की ऐसी रचना जिसका कोई अर्थ निकलता हो उसे शब्द कहते हैं।

परिभाषा–''एक या एक से अधिक वर्णों से बने सार्थक ध्वनि समूह को शब्द कहते हैं।''

शब्द के भेद–हिन्दी भाषा जहाँ अपनी जननी संस्कृत भाषा के समृद्ध शब्द भण्डार से प्राप्त परम्परागत विकास के मार्ग पर बढ़ी, वहीं इसने अनेक भाषाओं के सम्पर्क से प्राप्त शब्दों से भी अपने शब्द-भंडार में वृद्धि की है। साथ ही नये भावों, विचारों, व्यापारों की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यकतानुसार नये शब्दों की रचना भी पूरी उदारता एवं तत्परता से की गई है। इस प्रकार हिन्दी की शब्द-संपदा न केवल विपुल है बल्कि विविधतापूर्ण भी हो गई है।

शब्द की उत्पत्ति, रचना, प्रयोग एवं अर्थ के आधार पर शब्द के भेद किए गये हैं। जिनका विस्तृत विवरण इस प्रकार है–

(क) उत्पत्ति के आधार पर–हिन्दी भाषा में संस्कृत, विदेशी भाषाओं, बोलियों एवं स्थानीय सम्पर्क भाषा के आधार पर निर्मित शब्द शामिल हैं। अत: उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर हिन्दी भाषा के शब्दों को निम्नांकित उपभेदों में बाँटा गया है–

(i) तत्सम–तत् + सम का अर्थ है–उसके समान। अर्थात् किसी भाषा में प्रयुक्त उसकी मूल भाषा के शब्दों को तत्सम कहते हैं। हिन्दी की मूल भाषा संस्कृत है। अत: संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे–अट्टालिका, उष्ट्र, कर्ण, चन्द्र, अग्नि, आम्र, गर्दभ, क्षेत्र आदि।

(ii) तद्भव शब्द–संस्कृत भाषा के वे शब्द, जिनका हिन्दी में रूप परिवर्तित कर, उच्चारण की सुविधानुसार प्रयुक्त किया जाने लगा, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं। जैसे–अटारी, ऊँट, कान, चाँद, आग, आम, गधा, खेत आदि।

तत्सम-तद्भव शब्दों की सूची

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अकार्य	अकाज	अज्ञानी	अनजाना
अगम्य	अगम	अन्धकार	अंधेरा
आश्चर्य	अचरज	अमावस्या	अमावस
अक्षत	अच्छत	अक्षर	आखर
अट्टालिका	अटारी	अमूल्य	अमोल

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
आम्रचूर्ण	अमचूर	गर्दभ	गधा
अंगुष्ट	अँगूठा	कर्म	काम
अष्टादश	अठारह	कदली	केला
अर्द्ध	आधा	कर्पूर	कपूर
अश्रु	आँसू	कपोत	कबूतर
अग्नि	आग	कार्य	काज
अन्न	अनाज	कार्तिक	कातिक
अमृत	अमिय	कास	खाँसी
आम्र	आम	कुम्भकार	कुम्हार
अर्पण	अरपन	कुष्ठ	कोढ़
आखेट	अहेर	कोकिल	कोयल
अगणित	अनगिनत	कृष्ण	किसन/कान्ह
आश्विन	आसोज	कंकण	कंगन
आलस्य	आलस	कच्छप	कछुआ
आशीष	असीस	क्लेश	कलेस
आश्रय	आसरा	कज्जल	काजल
उज्ज्वल	उजला	कर्ण	कान
उच्च	ऊँचा	कर्त्तरी	कैंची
उष्ट्र	ऊँट	गर्त	गड्ढा
एकत्र	इकट्ठा	स्तम्भ	खम्बा
कटु	कड़वा	क्षत्रिय	खत्री
इक्षु	ईख	खट्वा	खाट
उलूक	उल्लू	क्षीर	खीर
एला	इलायची	क्षेत्र	खेत
अंचल	आँचल	ग्रंथि	गाँठ
कटु	कड़वा	गायक	गवैया
कपाट	किवाड़	ग्रामीण	गँवार
कण्टक	काँटा	गोस्वामी	गुसाई
काष्ठ	काठ	गृह	घर
काक	कौवा/कौआ	गोमय	गोबर
किरण	किरन	गौर	गोरा
कुकुर	कुत्ता	गौ	गाय
कुपुत्र	कपूत	गुहा	गुफा
कोण	कोना	ग्राम	गाँव
कृषक	किसान	गम्भीर	गहरा
		गोपालक	ग्वाला

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
गोधूम	गेहूँ	तप्त	तपन
ग्रीष्म	गर्मी	तीक्ष्ण	तीखा
घट	घड़ा	तैल	तेल
घटिका	घड़ी	तपस्वी	तपसी
घोटक	घोड़ा	ताम्र	ताम्बा
घृत	घी	तीर्थ	तीरथ
गहन	घना	तुन्द	तोंद
चर्म	चाम	त्वरित	तुरन्त
चन्द्र	चाँद	तृण	तिनका
चतुष्कोण	चौकोर	दधि	दही
चतुर्दश	चौदह	दन्त	दाँत
चित्रकार	चितेरा	दीपशलाका	दीयासलाई
चैत्र	चैत	दीप	दीया
छत्र	छाता	दीपावली	दीवाली
चर्मकार	चमार	दुर्बल	दुबला
चर्वण	चबाना	द्विपट	दुपट्टा
चन्द्रिका	चाँदनी	द्वितीय	दूजा
चतुर्थ	चौथा	दूर्वा	दूब
चतुष्पद	चौपाया	दुग्ध	दूध
चंचु	चोंच	दु:ख	दुख
चतुर्विंश	चौबीस	दक्षिण	दाहिना
चौर	चोर	देव	दई/दैव
चित्रक	चीता	धर्म	धरम
चुम्बन	चूमना	धरणी	धरती
चक्र	चाक	धूम्र	धुआँ
छाया	छाँह	धर्त्तूर	धतूरा
छिद्र	छेद	धैर्य	धीरज
जन्म	जनम	धनश्रेष्ठी	धन्नासेठ
ज्योति	जोत/जोति	धान्य	धान
जिह्वा	जीभ	नग्न	नंगा
जंघा	जाँघ	नक्षत्र	नखत
ज्येष्ठ	जेठ	नव्य	नया
जामाता	जमाई	नापित	नाई
जीर्ण	झीना	नृत्य	नाच
झरण	झरना	नकुल	नेवला
		नव	नौ/नया

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
नयन	नैन	पृष्ठ	पीठ
निम्ब	नीम	पौत्र	पोता
निद्रा	नींद	प्रतिच्छाया	परछाँई
नासिका	नाक	फणि	फण/फन
निम्बुक	नींबू	फाल्गुन	फागुन
निष्ठुर	निठुर	परशु	फरसा
पक्ष	पंख	बधिर	बहरा
पथ	पंथ	बलीवर्द	बैल
पक्षी	पंछी	वंध्या	बाँझ
पद्म	पदम	बर्कर	बकरा
पट्टिका	पाटी/पट्टी	बालुका	बालू
पर्यक	पलंग	बुभुक्षु	भूखा
परीक्षा	परख	वंशी	बाँसुरी
पर्पट	पापड़	विकार	बिगाड़
पवन	पौन	भक्त	भगत
पत्र	पत्ता	भल्लुक	भालू
पाश	फन्दा	भगिनेय	भानजा
पाद	पैर	भिक्षा	भीख
पाषाण	पाहन	भद्र	भला
पुच्छ	पूँछ	भगिनी	बहिन
पुष्कर	पोखर	भाद्रपद	भादौ
पिपासा	प्यास	भ्रमर	भौंरा
पीत	पीला	भ्रातृ	भाई
पुत्र	पूत	वाष्प	भाप
पुष्प	पुहुप	मशक	मच्छर
पंक्ति	पंगत	मत्स्य	मछली
प्रहर	पहर	मल	मैल
पानीय	पानी	मक्षिका	मक्खी
पूर्ण	पूरा	मस्तक	माथा
पंचम	पाँचवाँ	मयूर	मोर
पूर्व	पूरब	मद्य	मद्
पक्षी	पंछी	मनुष्य	मानुस
प्रिय	पिय	मातृ	माता
प्रस्तर	पत्थर	मास	महीना
पितृ	पितर	मातुल	मामा
प्रकट	प्रगट	मित्र	मीत

तत्सम	तद्भव
मुक्ता	मोती
मुख	मुँह
मेघ	मेह
मृत्यु	मौत
मृतट्ट	मरघट
श्मशान	मसान
यति	जति
यजमान	जजमान
यमुना	जमुना
यम	जम
यश	जस
योगी	जोगी
युवा	जवान
यन्त्र–मन्त्र	जन्तर–मन्तर
यशोदा	जसोदा
रज्जु	रस्सी
राजपुत्र	राजपूत
रक्षा	राखी
यज्ञोपवीत	जनेऊ
यूथ	जत्था
राशि	रास
रिक्त	रीता
रुदन	रोना
रात्रि	रात
राज्ञी	रानी
लक्ष्मण	लखन
लज्जा	लाज
लवंग	लौंग
लेपन	लीपना
लौहकार	लुहार
लक्षण	लच्छन
लक्ष	लाख
लवण	लौंण/लौन
लक्ष्मी	लिछमी
लौह	लोहा
लोमशा	लोमड़ी

तत्सम	तद्भव
वणिक्	बनिया
वत्स	बच्चा/बछड़ा
वट	बड़
वर यात्रा	बरात
वचन	बचन
वाणी	बैन
विवाह	ब्याह
वर्षा	बरसात
वक	बगुला
वानर	बन्दर
विष्टा	बींट
विद्युत	बिजली
वृद्ध	बूढ़ा
व्याघ्र	बाघ
शैया	सेज
शाप	सराप
शीतल	सीतल
शुष्क	सूखा
शर्करा	शक्कर
शत	सौ
शाक	साग
शिक्षा	सीख
शुक	सुआ
शुण्ड	सूँड
श्यामल	साँवला
श्वास	साँस
श्रृंगार	सिंगार
श्रृंग	सींग
श्रेष्ठि	सेठ
सरोवर	सरवर
श्रृगाल	सियार

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
श्रावण	सावन	हरित	हरा
षोडश	सोलह	हस्तिनी	हथिनी
सप्तशती	सतसई	हट्ट	हाट
सन्ध्या	साँझ	हरिद्रा	हल्दी
सपत्नी	सौत	हण्डी	हाँडी
सर्प	साँप	हस्त	हाथ
ससर्प	सरसों	हरिण	हिरन/हिरण
सत्य	सच	हास्य	हँसी
सूत्र	सूत	हीरक	हीरा
सूर्य	सूरज	होलिका	होली
स्वर्णकार	सुनार	हिन्दोलना	हिण्डोला
साक्षी	साखी	हृदय	हिय
स्वप्न	सपना	क्षण	छिन
स्थल	थल	क्षति	छति
स्थान	थान	क्षीण	छीन
स्नेह	नेह	क्षार	खार
स्पर्श	परस	क्षेत्र	खेत
		त्रयोदश	तेरह

(iii) देशज शब्द–किसी भाषा में प्रयुक्त ऐसे क्षेत्रीय शब्द जिनके स्रोत का आधार या तो भाषा-व्यवहार हो या उसका कोई पता नहीं हो, देशज शब्द कहलाते हैं। समय, परिस्थिति एवं आवश्यकतानुसार क्षेत्रीय लोगों द्वारा जो शब्द गढ़ लिए जाते हैं, उन्हें देशज शब्द कहते हैं। जैसे–परात, काच, ढोर, खचाखच, फटाफट, मुक्का आदि।

देशज शब्दों के भेद इस प्रकार हैं–

(अ) अपनी गढ़न्त से बने शब्द–अपने अन्तर्मन में उमड़ रही भावनाओं यथा–खुशी, गम अथवा क्रोध की अभिव्यक्ति करने के लिए व्यक्ति अति भावावेश में कुछ मनगढ़न्त ध्वनियों का उच्चारण करने लगता है और यही ध्वनियाँ जब बार-बार प्रयोग में आती हैं तो एक बड़ा जन-समुदाय उनका प्रयोग करने लगता है और धीरे-धीरे उनका प्रयोग साहित्य में भी होने लगता है। जैसे–ऊधम, अंगोछा, खुरपा, ढोर, लपलपाना, बुद्धू, लोटा, परात, चुटकी, चाट, ठठेरा, खटपट आदि।

(आ) द्रविड़ जातियों से आये देशज शब्द–अनल, कज्जल, कटी, चिकना, ताला, लूंगी, इडली, डोसा आदि।

(इ) कोल, संथाल आदि से आए शब्द–कपास, कोड़ी, पान, परवल, बाजरा, सरसों आदि।

(iv) विदेशी शब्द–राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक कारणों से किसी भाषा में अन्य देशों की भाषाओं के भी शब्द आ जाते हैं, उन्हें विदेशी शब्द कहते हैं। हिन्दी में अंग्रेजी, फ़ारसी, पुर्तगाली, तुर्की, फ्रांसीसी, चीनी, डच, जर्मनी, रूसी, जापानी, तिब्बती, यूनानी भाषा के शब्द प्रयुक्त होते हैं।

(अ) अंग्रेजी भाषा के शब्द जो प्रायः हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं–अफसर, एजेण्ट, क्लास, क्लर्क, नर्स, कार, कॉपी, कोट, गार्ड, चैक, टेलर, टीचर, ट्रक, टैक्सी, स्कूल, पैन, पेपर, बस, रेड़ियो, रजिस्टर, रेल, रेडीमेड, शर्ट, सूट, स्वेटर, टिकट आदि।

(आ) अरबी भाषा के शब्द–अक्ल, अदालत, आजाद, इन्तजार, इनाम, इलाज, इस्तीफा, कमाल, कब्जा, कानून, कुर्सी, किताब, किस्मत, कबीला, कीमत, जनाब, जलसा, जिला, तहसील, नशा, तारीख, ताकत, तमाशा, दुनिया, दौलत, नतीजा, फकीर, फैसला, बहस, मदद, मतलब, लिफाफा, हलवाई, हुक्म, हिम्मत आदि।

(इ) फ़ारसी के शब्द–अख़बार, अमरूद, आराम, आवारा, आसमान, आतिशबाज़ी, आमदनी, कमर, कारीगर, कुश्ती, खजाना, खर्च, खून, गुलाब, गुब्बारा, जानवर, जेब, जगह, जमीन, दवा, जलेबी, जुकाम, तनख्वाह, तबाह, दर्जी, दीवार, नमक, बीमार, नेक, मजदूर, लगाम, शेर, सूखा, सौदागर, सुल्तान, सुल्फा आदि।

(ई) पुर्तगाली भाषा से–अचार, अगस्त, आलपिन, आलू, आया, अनन्नास, इस्पात, कनस्तर, कारबन, कमीज, कमरा, गोभी, गोदाम, गमला, चाबी, पीपा, पादरी, फीता, बस्ता, बटन, बाल्टी, पपीता, पतलून, मेज, लबादा, संतरा, साबुन आदि।

(उ) तुर्की भाषा से–आका, उर्दू, काबू, कैंची, कुर्की, कुली, कलंगी, कालीन, चाक, चिक, चेचक, चुगली, चोगा, चम्मच, तमगा, तमाशा, तोप, बारूद, बावर्ची, बीबी, बेगम, बहादुर, मुगल, लाश, सराय आदि।

(ऊ) फ्रेन्च (फ्रांसीसी) से–अंग्रेज, काजू, कारतूस, कूपन, टेबुल, मेयर,मार्शल, मीनू, रेस्ट्रां, सूप आदि।

(ए) चीनी से–चाय, लीची, लोकाट, तूफान आदि।

(ऐ) डच से–तुरुप, बम, चिड़िया, ड्रिल आदि।

(ओ) जर्मनी से–नात्सी, नाजीवाद, किंडर, गार्टन आदि।

(औ) तिब्बती से–लामा, डांडी।

(अं) रूसी से–जार, सोवियत, रूबल, स्पूतनिक, बुजुर्ग, लूना आदि।

(अः) यूनानी से–एकेडमी, एटम, एटलस, टेलिफोन, बाइबिल आदि।

(v) संकर शब्द–हिन्दी में वे शब्द जो दो अलग-अलग भाषाओं के शब्दों को मिलाकर बना लिए गए हैं, संकर शब्द कहलाते हैं। जैसे–

वर्षगाँठ – वर्ष (संस्कृत) + गाँठ (हिन्दी)

उद्योगपति – उद्योग (संस्कृत) + पति (हिन्दी)

रेलयात्री – रेल (अंग्रेजी) + यात्री (संस्कृत)

टिकिटघर – टिकिट (अंग्रेजी) + घर (हिन्दी)

नेकनीयत – नेक (फारसी) + नीयत (अरबी)

जाँचकर्त्ता – जाँच (फारसी) + कर्त्ता (हिन्दी)

बेढंगा – बे (फारसी) + ढंगा (हिन्दी)

बेआब – बे (फारसी) + आब (अरबी)

सजा प्राप्त – सजा (फारसी) + प्राप्त (हिन्दी)

उड़नतश्तरी – उड़न (हिन्दी) + तश्तरी (फारसी)

बेकायदा – बे (फारसी) + कायदा (अरबी)

बमवर्षा – बम (अंग्रेजी) + वर्षा (फारसी)

(ख) रचना के आधार पर–नए शब्द बनाने की प्रक्रिया को रचना या बनावट कहते हैं। रचना प्रक्रिया के आधार पर शब्दों के तीन भेद किये जाते हैं–

(i) रूढ़ शब्द (ii) यौगिक शब्द (iii) योगरूढ़ शब्द

(i) रूढ़ शब्द–वे शब्द जो किसी व्यक्ति, स्थान, प्राणी और वस्तु के लिए वर्षों से प्रयुक्त होने के कारण किसी विशिष्ट अर्थ में प्रचलित हो गये हैं, 'रूढ़ शब्द' कहलाते हैं। इन शब्दों की निर्माण प्रक्रिया भी ज्ञात नहीं होती तथा इनका कोई अन्य अर्थ भी नहीं होता। जैसे–दूध, गाय, रोटी, दीपक, पेड़, पत्थर, देवता, आकाश, मेंढ़क, स्त्री आदि।

(ii) यौगिक शब्द–वे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों से बने हैं। उन शब्दों का अपना पृथक अर्थ भी होता है किन्तु मिलकर अपने मूल अर्थ के अतिरिक्त एक नये अर्थ का भी बोध कराते हैं, उन्हें 'यौगिक शब्द' कहते हैं। समस्त सन्धि, समास, उपसर्ग एवं प्रत्यय से बने शब्द यौगिक शब्द कहलाते हैं। जैसे–विद्यालय (विद्या + आलय), प्रेमसागर (प्रेम + सागर), प्रतिदिन (प्रति + दिन), दूधवाला (दूध + वाला), राष्ट्रपति (राष्ट्र + पति) एवं महर्षि (महा + ऋषि)।

(iii) योगरूढ़ शब्द–वे यौगिक शब्द जिनका निर्माण पृथक-पृथक अर्थ देने वाले शब्दों के योग से होता है, किन्तु वे अपने द्वारा प्रतिपादित अनेक अर्थों में से किसी एक विशेष अर्थ का ही प्रतिपादन करने के लिए रूढ़ हो गये हैं, ऐसे शब्दों को योगरूढ़ शब्द कहते हैं।

जैसे–'पीताम्बर' शब्द 'पीत' (पीला) + 'अम्बर' (वस्त्र) के योग से बना है किन्तु अपने मूल अर्थ से इतर इस शब्द का अर्थ 'विष्णु' रूढ़ है। इसी प्रकार दशानन, गजानन, जलज, लम्बोदर, त्रिनेत्र, चतुर्भुज, घनश्याम, रजनीचर, मुरारि, चक्रधर, षडानन आदि शब्द योगरूढ़ हैं।

(ग) प्रयोग के आधार पर–प्रयोग अथवा रूप परिवर्तन के आधार पर हिन्दी में शब्दों के दो भेद किए जाते हैं–

(i) विकारी–वे शब्द जिनका लिंग, वचन, कारक एवं काल के अनुसार रूप परिवर्तित हो जाता है, विकारी शब्द कहलाते हैं। विकारी शब्दों में समस्त संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया शब्द आते हैं। इनका विस्तृत विवरण अलग अध्याय में किया जाएगा।

(ii) अविकारी या अव्यय शब्द–वे शब्द जिनका लिंग, वचन, कारक एवं काल के अनुसार रूप परिवर्तित नहीं होता, अविकारी या अव्यय शब्द कहलाते हैं। इन शब्दों का रूप सदैव वही बना रहता है। इसलिए इन्हें अव्यय कहा जाता है। अविकारी शब्दों में क्रिया विशेषण, सम्बन्ध बोधक, समुच्चय बोधक तथा विस्मयादि बोधक आदि अव्यय शब्द आते हैं।

(घ) अर्थ के आधार पर–अर्थ के आधार पर शब्दों के निम्नांकित भेद किये जाते हैं–

(i) एकार्थी शब्द–जिन शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में होता है उन्हें एकार्थी शब्द कहते हैं। जैसे–दिन, धूप, लड़का, पहाड़, नदी आदि।

(ii) अनेकार्थी शब्द–जिन शब्दों के अर्थ एक से अधिक होते हैं उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं। इनका प्रयोग अलग-अलग अर्थ में प्रसंगानुसार किया जाता है। जैसे–अज, अमृत, कर, सारंग, हरि आदि।

(iii) पर्यायवाची शब्द–वे शब्द जिनका अर्थ समान होता है। अर्थात् किसी शब्द के समान अर्थ की प्रतीति कराने वाले अथवा अर्थ की दृष्टि से लभग **समानता** रखने वाले शब्द पर्यायवाची कहलाते हैं।

जैसे–अमृत, पीयूष, सुधा, अमिय, सोम आदि शब्द 'अमृत' के समानार्थी हैं अतः ये शब्द अमृत के पर्यायवाची शब्द हैं।

(iv) विलोम शब्द–एक दूसरे का विपरीत अर्थ देने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं। जैसे–दिन-रात, माता-पिता आदि।

(v) सम उच्चरित शब्द या युग्म शब्द–ऐसे शब्द जिनका उच्चारण समान प्रतीत होता है किन्तु अर्थ पूर्णतया भिन्न होता है उन्हें समानार्थी प्रतीत होने वाले भिन्नार्थक शब्द अथवा 'युग्म-शब्द' कहते हैं।

जैसे–आदि-आदी।

'आदि' का अर्थ प्रारम्भिक है किन्तु 'आदी' का अर्थ है आदत होना अथवा लत होना। इस प्रकार उच्चारण समान प्रतीत होते हुए भी अर्थ भिन्न हैं।

(vi) शब्द समूह के लिए एक शब्द–जब किसी वाक्य, वाक्यांश या समूह का तात्पर्य एक शब्द द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है अथवा 'एक शब्द' में उस वाक्यांश का अर्थ निहित हो, उसे 'शब्द समूह' के लिए 'एक शब्द' कहते हैं। जैसे–जहाँ जाना संभव न हो = अगम्य। जो अपनी बात से टले नहीं = अटल।

(vii) समानार्थक प्रतीत होने वाले भिन्नार्थक शब्द–ऐसे शब्द जो प्रथम दृष्टया रचना की दृष्टि से समान प्रतीत होते हैं एवं अर्थ की दृष्टि से भी बहुत समीप होते हैं। किन्तु उनके अर्थ में बहुत सूक्ष्म अन्तर होता है तथा अलग सन्दर्भ में ही जिनका प्रयोग सम्भव है, जैसे–

अस्त्र–फेंक कर वार किये जाने वाले हथियार जैसे–तीर, भाला आदि।

शस्त्र–जिन हथियारों का प्रयोग हाथ में रखकर किया जाता है, जैसे–तलवार, लाठी, चाकू आदि।

(viii) समूहवाची शब्द–ऐसे शब्द जो एक समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं अथवा सामूहिक वस्तुओं का अर्थ प्रकट करते हैं उन्हें समूहवाची शब्द कहते हैं, जैसे–

गट्ठर–लकड़ी या पुस्तकों का समूह।

गुच्छा–चाबियों या अंगूर का समूह।

गिरोह–माफिया या चोर, डाकुओं का समूह।

रेवड़–भेड़, बकरी या पशुओं का समूह।

इसी प्रकार झुण्ड, टुकड़ी, पंक्ति, माला आदि शब्द हैं।

(ix) ध्वन्यार्थक शब्द–ऐसे शब्द जिनका अर्थ ध्वनि पर आधारित हो, उन्हें ध्वन्यार्थक शब्द कहते हैं।

इनको निम्नांकित उपभेदों में बाँट सकते हैं–

पशुओं की बोलियाँ–दहाड़ना (शेर), भौंकना (कुत्ता), हिनहिनाना (घोड़ा), चिंघाड़ना (हाथी), मिमियाना (भेड़, बकरी), रंभाना (गाय), फुंफकारना (साँप), टर्राना (मेंढक), गुर्राना (चीता) एवं म्याऊँ (बिल्ली) आदि।

पक्षियों की बोलियाँ–चहचहाना (चिड़िया), पीऊ-पीऊ (पपीहा), काँव-काँव (कौआ), गुटर गूँ (कबूतर), कुकड़ू कूं (मुर्गा), कुहुकना (कोयल) आदि।

जड़ पदार्थों की ध्वनियाँ–कड़कना (बिजली), खटखटाना (दरवाजा), छुक-छुक (रेलगाड़ी), गरजना (बादल), खनखनाना (सिक्के) आदि।

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. निम्नलिखित में तत्सम शब्द कौनसा है?

(अ) ऊँचा (ब) अश्रु (स) आग (द) चीता [ ]

प्र. 2. निम्नलिखित में तद्भव शब्द कौनसा है?

(अ) क्षत्रिय (ब) कृष्ण (स) गृह (द) गाँठ [ ]

प्र. 3. निम्नलिखित में से देशज शब्द कौनसा है?

(अ) काच (ब) ताकत (स) सपना (द) थान [ ]

प्र. 4. न्लिलिखित में से योगरुढ़ शब्द का चयन कीजिए–

(अ) विद्यालय (ब) दशानन (स) हल्दी (द) सावन [ ]

उत्तर–1. (ब) 2. (द) 3. (अ) 4. (ब)

प्र. 5. तत्सम शब्द किसे कहते हैं?

प्र. 6. तद्भव शब्द से क्या तात्पर्य है?

प्र. 7. निम्न तद्भव शब्दों के तत्सम रूप बताइए–

मेह, बन्दर, सूखा, पहर एवं पंगत।

प्र. 8. 'संकर' शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बतलाइये।

प्र. 9. 'रूढ़' शब्द से क्या तात्पर्य है? उदाहरण सहित लिखिए।

प्र. 10. 'यौगिक' एवं 'योगरूढ़' में क्या अन्तर है?

प्र. 11. 'प्रयोग के आधार' पर एवं 'अर्थ के आधार पर' शब्द के कितने भेद हैं लिखिए।